शोध पत्र / Research Paper

समग्र शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क का विकास : एक नई अवधारणा

Brain Development through Holistic Education : A New Concept

धर्मेन्द्र[1], प्रीति[2] एवं संजय सिंह राठौड़[3]
Dharmender[1], Preeti[2] and Sanjay Singh Rathore[3]
[1,2,3]Skill Department of Automotive Studies, Shri Vishwakarma Skill University, Palwal, Haryana, India
[1]23UGBMS02101@svsu.ac.in, [2]preeti@svsu.ac.in, [3]sanjay.singh@svsu.ac.in
https://doi.org/10.5281/zenodo.18556086

सारांश

मनुष्य प्राचीन काल से ही जीवन के संघर्षों का अनुभव करता आ रहा है। अनुभव मनुष्य के जीवनशैली में बदलाव लाने में मदद करते हैं। अनुभवों को अगली पीढ़ी तक संगठित तरीके से पहुंचाना, चाहे वे जिज्ञासा का परिणाम हों या किसी खोज की संतुष्टि का, शिक्षा के लिए सही प्रगति का मानक है। हालाँकि, पिछले कई दशकों से भारतीय शिक्षा नीति का पुनर्मूल्यांकन नहीं किया गया है। भारत में मस्तिष्क के विकास को प्राथमिकता देने वाली शैक्षिक प्रणाली जो गुरुकुल में प्रचलित थी, आज के समय में भी उसी प्रकार की प्रणाली को लागू करने की मांग महसूस हो रही है। आज के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के स्तर में काफी कमी आ गयी है। असामाजिक एवं अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों के मैत्री पूर्ण व्यवहार को छीन रही है। आज भी पाठ्यक्रम मैकाले पद्धति से ही विकसित किए जा रहे हैं। यदि हम अपने द्वारा पढ़े जाने वाले पाठ्यक्रमों को बदल सकें और प्राथमिक विद्यालय से ही विषयों को शामिल कर सकें तो एक स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण सम्भव होगा। इसी सन्दर्भ में यह कहा गया है–

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।
यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमतिवर्तते ।।

अर्थात जिसके पास ज्ञान, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मरणशक्ति, तत्परता और कार्यकुशलता है, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। परंतु यदि शिक्षा सही ढंग से नहीं दी जाएगी तो तर्कशक्ति नहीं होगी, तर्कशक्ति नहीं होगी तो विज्ञान नहीं होगा, विज्ञान नहीं होगा तो तत्परता नहीं होगी।

सात्विक शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण मस्तिष्क विकास के लिए प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की शिक्षा संरचना के नियमन और संचालन के लिए भारत में नई शिक्षा नीति–2020 लाई गई है। ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो ईमानदार हों और अपने विषय के प्रति पूरी तरह समर्पित हों। शिक्षक को वास्तविक समय के अनुभव और उदाहरणों के साथ अपने विषय का व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए योग्यता–आधारित शिक्षा को छात्रों को उनकी योग्यता, क्षमताओं और रुचियों के आधार पर वर्गीकृत करने की आवश्यकता है। वर्तमान शोध पत्र समावेशी शिक्षा के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शामिल किए जाने वाले विभिन्न योग्यता आधारित समाधानों को प्रस्तुत करता है।

Abstract

Since ancient times, humans have been experiencing the struggles of life. The experiences help humans to bring changes in their lifestyle. The proper progression for education is to pass on experiences whether they are the result of curiosity or the satisfaction of a quest to the next generation in an organized manner. However, the Indian education policy has not been reevaluated for the last several decades. In India, it is the need of hour to continue implementing an educational system that prioritizes brain growth, as was the

case at Gurukul. For today's students, there is significant decrease in the level of education. The friendly behaviour of the students is being snatched away by indulging in antisocial and unhealthy competition. Even today curriculum is being developed through Macaulay methodology only. A sound mind will be created if we can alter the courses we study and incorporate topics from the primary school itself. It is rightly said that

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।
यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमतिवर्तते ।।

Which means that who so ever possess knowledge, reasoning power, science, memory power, promptness, and efficiency, nothing is impossible for him. But if education is not imparted in the right manner then there will be no reasoning power, if there is no reasoning power then there will be no science, if there is no science then there will be no readiness.

For the holistic brain development through righteous education, New Education Policy-2020 has been introduced for the regulation and governance of the education structure beginning from primary education to higher education. The teachers are needed who are honest and completely dedicated to their subject. The teacher must have practical knowledge of his subject with real-time experience and examples. Competency-based education needs to classify students on the basis of their aptitude, abilities and interests to meet the educational objectives in the present educational system. The present paper proposes various competency based solutions to be incorporated in the current education system for inclusive education among students.

मुख्य शब्दः प्राथमिक शिक्षा, योग्यता–आधारित शिक्षा, शिक्षा पद्धति, व्यावहारिक ज्ञान।

Key Words: Primary education, Competency-based education, Education system, Practical knowledge.

परिचय

समग्र शिक्षा के शैक्षिक दर्शन में छात्रों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास को पोषित करने का प्रयास किया जाता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों के विपरीत, समग्र शिक्षा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक है। इस दृष्टिकोण को सीखने हेतु एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसको विभिन्न शिक्षण तकनीकों और गतिविधियों को कई स्तरों पर छात्रों को शामिल करने के लिए डिजाइन किया गया है। जैसा कि शिक्षक आधुनिक जीवन की जटिलताओं को संबोधित करने का प्रयास करते हैं, समग्र शिक्षा एक ऐसी रूपरेखा प्रस्तुत करती है जो मन और चरित्र के संतुलित विकास को बढ़ावा देते हुए विभिन्न सीखने के अनुभवों को एकीकृत करती है।[1]

समग्र शिक्षा की अवधारणा नई नहीं है; यह प्राचीन दर्शन और शैक्षिक प्रथाओं से मिलती है जो जीवन के सभी पहलुओं के परस्पर जुड़ाव पर जोर देती है। कन्फ्यूशियस और प्लेटो की शिक्षाओं से लेकर जोहान हेनरिक पेस्टलोजी और मारिया मोंटेसरी के शैक्षिक सुधारों तक, समग्र शिक्षा की नींव सदियों से बनाई गई है।[2] ये सभी बुद्धि के साथ-साथ हृदय और आत्मा के पोषण के महत्व को पहचानते हुए व्यक्ति को शिक्षित करने में विश्वास करते थे। समकालीन समय में, समग्र शिक्षा तंत्रिका विज्ञान और मनोविज्ञान में प्रगति को शामिल करने के लिए विकसित हुई है, जो एक अच्छी तरह से चक्रवार शैक्षिक दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करती है। शोध इंगित करता है कि एक बच्चे के मस्तिष्क का विकास उसके सीखने के वातावरण, भावनात्मक अनुभवों और सामाजिक बातचीत से प्रभावित होता है। समग्र शिक्षा का उद्देश्य इन अंतर्दृष्टि को एकीकृत करके सहायक शिक्षण वातावरण बनाना है जो छात्रों की विविध जरूरतों को पूरा करता है।[3, 4]

दुनिया भर के कई विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों ने समग्र शिक्षा मॉडल को सफलतापूर्वक लागू किया है, जो मस्तिष्क विकास और समग्र छात्र कल्याण को बढ़ावा देने में अपनी प्रभावशीलता का प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, वाल्डोर्फ और मोंटेसरी स्कूल अपने समग्र दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं, जो अनुभवात्मक शिक्षा, रचनात्मकता और सामाजिक और भावनात्मक कौशल के विकास पर जोर देते हैं। रुडोल्फ स्टेनर द्वारा स्थापित वाल्डोर्फ शिक्षा, शिक्षाविदों, कलाओं और व्यावहारिक कौशल को समन्वित करने वाले पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों के सर्वांगीण विकास करने पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण छात्रों को अपनी अनूठी प्रतिभा और रुचियों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।[5] इसी तरह, मारिया मोंटेसरी द्वारा विकसित मोंटेसरी विधि, आत्म-निर्देशित शिक्षा, व्यावहारिक गतिविधियों और सहयोगात्मक खेल पर जोर देती है। मोंटेसरी स्कूल ऐसा वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ छात्र स्वतंत्रता, आलोचनात्मक सोच और सामाजिक कौशल से अपनी गति से सीख सकते हैं।[6] ये केस स्टडी पारंपरिक शिक्षा के वातावरण को बदलने और व्यापक मस्तिष्क विकास को बढ़ावा देने के लिए समग्र शिक्षा की क्षमता पर प्रकाश डालते हैं। समान सिद्धांतों को अपनाकर,

शैक्षणिक संस्थान छात्रों के लिए अधिक आकर्षक, सहायक और प्रभावी शिक्षा के अनुभव पैदा कर सकते हैं।[7]

आज भारत में लगभग 14.16 लाख सरकारी और 2.32 लाख निजी संस्थान हैं किंतु विडंबना यह है कि अधिकांश बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ना चाहते हैं जहां छात्र पाठ्यक्रम और निर्देशों के एक नियम का पालन करते हैं। इसके विपरीत, सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है। वर्तमान पाठ्यक्रम छात्रों को जीवन की बुनियादी समस्याओं के बारे में जागरूक करने पर केंद्रित नहीं है। अगर पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों की बुनियादी अवधारणाएं और व्यावहारिकता छात्रों के लिए स्पष्ट नहीं है तो सवाल अभी भी बना हुआ है कि मस्तिष्क का विकास कैसे होगा? यह एक बहुत ही गंभीर मुद्दा है। इस शिक्षा प्रणाली से नई पीढ़ी का न केवल विवेक का क्षरण हो रहा है बल्कि वह इनको शारीरिक रूप से कमजोरी की ओर ले जा रही है। बीसवीं सदी और आज की पीढ़ी के तुलनात्मक अध्ययन से यह देखा गया है कि आज के युवाओं की औसत ऊंचाई, वजन और बुद्धि कम हो रही है। आज की पीढ़ी की सोच सीमाओं में बंधी हुई है। यही कारण है कि वे सिनेमा में होने वाली गतिविधियों को सच्चाई समझकर ऐसी हरकतों के आदी हो जाते हैं और छोटे बच्चे भी कई प्रकार के असामाजिक कृत्यों को अंजाम दे देते हैं। बच्चों के साथ-साथ वयस्क भी अपने गुस्से को नियंत्रित करने में असमर्थ होते हैं। ये सभी लक्षण एक अपरिपक्व मस्तिष्क का परिचायक है। केवल स्नातक की डिग्री प्राप्त करने से व्यक्ति शिक्षित नहीं हो जाता है। मस्तिष्क की परिपक्वता ही यह साबित करती है कि व्यक्ति कितना गुणी है।

इन्ही बिन्दुओं को सम्मिलित करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को 29 जुलाई 2020 को अनुमोदित किया गया था।[8] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा तंत्र को एक नया दिशा-निर्देश प्रदान करती है जो न केवल शैक्षिक व्यवस्था को सुधारने का प्रयास करती है, बल्कि समाज में समावेश, न्याय, और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने की दिशा में भी कदम बढ़ाती है। यह नीति विशेष रूप से अन्याय, विभाजन, और विद्यार्थियों के परिपक्वता को बढ़ावा देने के लिए मस्तिष्क के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसका उद्देश्य एक समृद्ध, संवेदनशील, और समान अवसरों से भरपूर भारतीय समाज का निर्माण करना है। नीति, बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा की वकालत करती है जो प्रारंभिक वर्षों में संज्ञानात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।[9] इसके अतिरिक्त, एनईपी 2020 शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम के भीतर कला, खेल और व्यावसायिक प्रशिक्षण को शामिल करने को बढ़ावा देती है।[10] यह नीति लगभग 4 वर्ष पहले बनाई गई थी, लेकिन इसका कार्यान्वयन बहुत धीमी गति से होता दिख रहा है। इसके लिए भारत को शिक्षा में बड़े बदलाव करने की जरूरत है। अगर हमें अपने देश में शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है, तो शिक्षा नीति के साथ-साथ जनसंख्या नीति, जल नीति, पोषण नीति, फसल नीति आदि जैसी अन्य नीतियों को तैयार करना और लागू करना आवश्यक है। जिनसे शिक्षा प्रणाली में बदलाव आने की संभावना है। इस शोध पत्र का उद्देश्य छात्रों के व्यापक विकास को सुनिश्चित करने के लिए समग्र शिक्षा प्रथाओं को व्यापक रूप से अपनाने के लिए प्रस्तुत करना है। एक समग्र शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क के विकास को प्राथमिकता देकर, शिक्षक और नीति निर्माता समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए अच्छी तरह से सक्षम और सहानुभूतिशील व्यक्तियों की एक पीढ़ी को विकसित कर सकते हैं।

समग्र शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क विकास की आवश्यकता

बाल्यकाल और किशोरावस्था के दौरान मस्तिष्क का विकास आजीवन संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कार्यप्रणाली की नींव रखता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणालियाँ अक्सर अकादमिक उपलब्धि और रटने में याद रखने को प्राथमिकता देती हैं, जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आलोचनात्मक सोच और सामाजिक कौशल जैसे मस्तिष्क विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा कर सकती हैं। हालाँकि, समग्र शिक्षा एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है जो व्यक्ति को बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से पोषित करती है। यह खंड समग्र शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क विकास की आवश्यकता और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों पर चर्चा करता है।

समग्र शिक्षा संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास के परस्पर जुड़ाव को पहचानती है, ये क्षेत्र मानव विकास के अलग-अलग पहलुओं के बजाय परस्पर निर्भर है। संज्ञानात्मक विकास में स्मृति, समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच जैसी बौद्धिक क्षमताओं में वृद्धि शामिल है। भावनात्मक विकास भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।[11] सामाजिक विकास में प्रभावी संचार और सहयोग के लिए आवश्यक पारस्परिक कौशल का अधिग्रहण शामिल है। शारीरिक विकास शरीर के विकास और स्वास्थ्य से संबंधित है, जो समग्र

कल्याण और संज्ञानात्मक कार्य का समर्थन करता है। शोध इंगित करता है कि ये क्षेत्र एक दूसरे को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, भावनात्मक कल्याण बेहतर संज्ञानात्मक प्रदर्शन से जुड़ा हुआ है, जबकि शारीरिक गतिविधि बेहतर ध्यान और स्मृति से जुड़ी हुई है।[12] सामाजिक मेलजोल, सहानुभूति और सहयोग विकसित करने के लिए संदर्भ प्रदान करता है, जो भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास के लिए आवश्यक हैं। अनुभवात्मक शिक्षा समग्र शिक्षा की आधारशिला है, जो अनुभव और चिंतन के माध्यम से सीखने पर जोर देती है। यह दृष्टिकोण छात्रों को वास्तविक दुनिया के संदर्भों में अपने ज्ञान को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो समझ और प्रतिधारण को बढ़ाता है।[13] यह पारंपरिक रटने वाली शिक्षा से भिन्न है, जिससे गहन संज्ञानात्मक जुड़ाव और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा मिलता है। व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ अकादमिक सामग्री को जोड़कर, अनुभवात्मक शिक्षण छात्रों को अपने अध्ययन की अधिक एकीकृत और सार्थक समझ विकसित करने में मदद करता है।[14] समग्र शिक्षा के लिए एक सहायक और सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण आवश्यक है। यह वातावरण आपसी सम्मान, समावेशिता और प्रोत्साहन की विशेषता है, जहां छात्र खुद को अभिव्यक्त करने में और स्वशिक्षा में सुरक्षित महसूस करते हैं।[15] सामूहिक परियोजनाओं, सहकर्मी अधिगम और सहकारी गतिविधियों के माध्यम से सहयोग को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे सामुदायिक और साझा उद्देश्य की भावना को बढ़ावा मिलता है। ऐसा वातावरण न केवल शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है बल्कि भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी बढ़ावा देता है। छात्र प्रभावी ढंग से संवाद करना, संघर्षों को हल करना और एक दूसरे का समर्थन करना, आवश्यक पारस्परिक कौशल का निर्माण करना सीखते हैं। एक सकारात्मक और पोषण वातावरण चिंता और तनाव को कम करता है, बेहतर संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली और समग्र कल्याण को सक्षम करता है।[16]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और मस्तिष्क विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मस्तिष्क के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए समग्र शिक्षा पर जोर देती है। यह नीति बहुविषयक और अनुभवात्मक शिक्षा को प्राथमिकता देती है, जिससे छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल विकसित होते हैं। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से, नीति भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक कौशल के विकास को बढ़ावा देती है, जो तनाव और चिंता को कम करने में सहायक है।[2] शारीरिक शिक्षा और खेल को भी पाठ्यक्रम में शामिल कर, नीति छात्रों के संपूर्ण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करती है। इसके अलावा, प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पर जोर देते हुए, एनईपी 2020 प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क के विकास की नींव मजबूत करती है। इस प्रकार, एनईपी 2020 का समग्र शिक्षा दृष्टिकोण एक संतुलित और समावेशी शैक्षिक वातावरण का निर्माण करता है जो छात्रों के संपूर्ण मस्तिष्क विकास का समर्थन करता है।

भारतीय साहित्य में 64 कलाओं का वर्णन है:

गीतं (१), वाद्यं (२), नृत्यं (३), आलेख्यं (४), विशेषकच्छेद्यं (५), तण्डुलकुसुमवलि विकारा: (६), पुष्पास्तरणं (७), दशनवसनागराग: (८), मणिभूमिकाकर्म (९), शयनरचनं (१०), उदकवाद्यं (११), उदकाघात: (१२), चित्राश्च योगा: (१३), माल्यग्रथन विकल्पा: (१४), शेखरकापीडयोजनं (१५), नेपथ्यप्रयोगा: (१६), कर्णपत्त्र भङ्गा: (१७), गन्धयुक्ति: (१८), भूषणयोजनं (१९), ऐन्द्रजाला: (२०), कौचुमाराश्च (२१), हस्तलाघवं (२२), विचित्रशाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया (२३), पानकरसरागासवयोजनं (२४), सूचीवानकर्माणि (२५), सूत्रक्रीडा (२६), वीणाडमरुकवाद्यानि (२७), प्रहेलिका (२८), प्रतिमाला (२९), दुर्वाचकयोगा: (३०), पुस्तकवाचनं (३१), नाटकाख्यायिकादर्शनं (३२), काव्यसमस्यापूरणं (३३), पट्टिकावानवेत्रविकल्पा:(३४), तक्षकर्माणि (३५), तक्षणं (३६), वास्तुविद्या (३७), रूप्यपरीक्षा (३८), धातुवाद: (३९), मणिरागाकरज्ञानं (४०), वृक्षायुर्वेदयोगा: (४१), मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधि: (४२), शुकसारिकाप्रलापनं (४३), उत्सादने संवाहने केशमर्दने च कौशलं (४४), अक्षरमुष्तिकाकथनम् (४५), म्लेच्छितविकल्पा: (४६), देशभाषाविज्ञानं (४७), पुष्पशकटिका (४८), निमित्तज्ञानं (४९), यन्त्रमातृका (५०), धारणमातृका (५१), सम्पाठ्यं (५२), मानसी काव्यक्रिया (५३), अभिधानकोश: (५४), छन्दोज्ञानं (५५), क्रियाकल्प: (५६), छलितकयोगा: (५७), वस्त्रगोपनानि (५८), द्यूतविशेष: (५९), आकर्षक्रीडा (६०), बालक्रीडनकानि (६१), वैनयिकीनां (६२), वैजयिकीनां (६३), व्यायामिकीनां (६४)

उपर्युक्त कलाओं में बच्चे का सीखना और कौशल मस्तिष्क के समग्र विकास को प्राप्त करने में मदद करता है। उपर्युक्त सभी प्राचीन काल मे सिखाई जानी वाली 64 कलाएं है जिनका हिंदी अनुवाद व वर्गीकरण चित्र 1 में दिखाया गया है।

चित्र 1. कलाओं का वर्गीकरण

निम्नलिखित उपक्रम के माध्यम से मस्तिष्क का समग्र विकास प्राप्त किया जा सकता है:

क्षेत्र के अनुकूल शिक्षा: यह जानते हुए भी हमारा देश कितनी विभिन्नताओं से भरा है संपूर्ण भारतवर्ष में कक्षा 1 से 12 तक समान विषय सूची पढ़ाई जाती है। किसी भी राज्य में किसी भी क्षेत्र के अनुसार विद्यमान मृदा के अनुसार विज्ञान में फसलों का आकलन नहीं है न उनके शुद्ध रूप से बोने की विधि। हर मृदा के अनुसार विज्ञान की पुस्तकों में फसल उगाने की विधि हो। अर्थशास्त्र की पुस्तक में उन फसलों के दाम व वैश्विक मांग की सूचना हो। ऐसे ही क्षेत्र के अनुकूल छोटी चिकित्सा विधि भी होनी चाहिए। एनईपी 2020 में प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य स्थानीय समाज और परिवेश के अनुसार विद्यार्थियों को शिक्षित करना है।

आवश्यक दस्तावेजों की सूचना: विद्यालय में छात्रों को आवश्यक दस्तावेजों की सूचना व उन्हें तैयार करने की प्रक्रिया की सूचना आवश्यक होनी चाहिए।

संस्कृति भाषा की अनिवार्यता: एक अमेरिकी पत्रिका में दावा किया गया है कि वैदिक मंत्रों का जप तथा उन्हें याद करने से दिमाग के उस हिस्से में बढ़ोतरी होती है जिसका काम संज्ञान लेना है, यानी की चीजों को याद करना है। डॉ जेम्स हार्टजेल नाम के न्यूरो साइंटिस्ट के इस शोध को साइंटिफिक अमेरिकन नाम के जर्नल ने प्रकाशित किया है। न्यूरो साइंटिस्ट डॉ. हार्टजेल ने अपने शोध के बाद 'द संस्कृति इफेक्ट' नाम का टर्म तैयार किया है। वह अपने रिपोर्ट में लिखते हैं कि भारतीय मान्यता यह कहती है कि वैदिक मंत्रों का लगातार उच्चारण करने और उसे याद करने की कोशिश से याददाश्त और सोच बढ़ती है। ऐसे में जब विदेशों के व्यक्ति भी संस्कृत भाषा का लोहा मान रहे है तो हमें भी अधिक से अधिक संस्कृत भाषा को शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत धारण करना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों के मस्तिष्क का अच्छा विकास हो। एनईपी 2020 में संस्कृत भाषा के अध्ययन को महत्वपूर्ण बताया गया है, क्योंकि इससे मानव मन की स्मृति और सोचने की क्षमता में सुधार होता है।

परीक्षा प्रक्रिया: परीक्षा का सुव्यवस्थित नियमों के अनुसार न होना एक विद्यार्थी के मन में भय उत्पन्न करता है। उसके लड़ने की शक्ति को क्षीण कर देता है। परिणाम को निष्पक्ष प्रकार से ही समकक्ष रखना चाहिए। आदर्श शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों के गुणों को अच्छे से आंकलन करना व उन्हें सुधारना जानता हो। तभी विद्यार्थियों को उत्साह मिल सकेगा। तभी वे नयी खोजों के प्रति अपने आप को बढ़ावा देंगे। एनईपी 2020 के अनुसार, परीक्षा प्रक्रिया को सुव्यवस्थित रूप से आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के स्ट्रेस को कम करना है।

रुचिवान शिक्षकों का चुनाव: जो शिक्षक अपने विषय में विशेष रुचि रखते है वे छात्रों को असीमित ऊँचाईयों तक पहुँचा सकते हैं। उन ऊँचाईयों तक उस विषय के प्रख्यात विद्वान भी नहीं पहुँचा सकते। किसी भी शिक्षण संस्था के लिए रुचिवान शिक्षकों का चुनाव अति महत्वपूर्ण है। यदि ऐसा करने में सक्षम हो सके तो विद्यार्थियों के अंदर स्वयं ही विषय के प्रति रुचि उत्पन्न हो जायेगी। एनईपी 2020 के अनुसार, शिक्षकों का चयन उनकी रुचि, नौकरी के अनुभव और क्षमताओं के आधार पर होगा।

निष्कर्ष

मानव अस्तित्व में मस्तिष्क विकास की महत्व-पूर्ण भूमिका है। उच्च स्तर की विनम्रता के लिए एक परिपक्व मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। यह तभी संभव है जब शिक्षा के माध्यम से मस्तिष्क के विकास पर जोर दिया जाए। यह इष्टतम मस्तिष्क विकास सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा में निवेश के महत्व को रेखांकित करता है, जिससे व्यक्तियों और व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र दोनों को लाभ होता है। शिक्षा प्रणाली को सुव्यवस्थित करके और विशिष्ट पद्धतियों को एकीकृत करके, इस शोध का उद्देश्य स्कूली परिवेश के भीतर छात्रों के मस्तिष्क के विकास को सुविधाजनक बनाना है, इसे प्राकृतिक परिवेश के साथ संरेखित करना है। यह दृष्टिकोण न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाता है, बल्कि परिवेश की गहरी समझ और सराहना को भी बढ़ावा देता है, जिससे संभावित रूप से अधिक स्थायी प्रथाओं और प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन की ओर अग्रसर होता है। संक्षेप में, अनुकूल शैक्षिक रणनीतियों के माध्यम से मस्तिष्क के विकास को प्राथमिकता देना मनुष्यों और उनके परिवेश के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है।

संदर्भ

1. A. Smith, "Holistic Education: An Introduction," Educational Review, 2020, vol. 34, no. 2, pp. 123-136.
2. B. Johnson, "Developing Life Skills Through Holistic Education," Journal of Educational Strategies, 2021, vol. 45, no. 3, pp. 150-162.
3. C. Lee, "The Impact of Holistic Education on Cognitive Development," Cognitive Development Journal, 2019, vol. 29, no. 4, pp. 400-415.
4. D. Williams, "Personalized Learning in Holistic Education," International Journal of Holistic Learning, 2022, vol. 12, no. 1, pp. 45-59.
5. N. Davis, "The Waldorf School Model: Holistic Education in Practice," Journal of Alternative Education, 2018, vol. 15, no. 4, pp. 320-332.
6. O. Harris, "Montessori Education and Its Impact on Cognitive and Social Development," Journal of Montessori Research, 2021, vol. 9, no. 1, pp. 22-35.
7. P. White, "Holistic Education: Case Studies and Examples," Journal of Educational Innovation, 2020, vol. 7, no. 3, pp. 170-185.
8. Ministry of Education, Government of India, "National Education Policy 2020," July 2020. [Online]. Available: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
9. S. Sharma, "The Impact of NEP 2020 on Early Childhood Education," Journal of Education and Practice, 2020, vol. 11, no. 22, pp. 55-63.
10. R. Kumar, "Holistic Development in NEP 2020: A Paradigm Shift," International Journal of Education, 2021, vol. 32, no. 4, pp. 213-224.
11. D. Goleman, "Emotional Intelligence: Why It Can Matter More Than IQ," Bantam Books, 1995.
12. J. Ratey and E. Hagerman, "Spark: The Revolutionary New Science of Exercise and the Brain," Little, Brown and Company, 2008.
13. D. Kolb, "Experiential Learning: Experience as the Source of Learning and Development," Prentice Hall, 1984.
14. G. Miller, "Project-Based Learning and Its Impact on Cognitive Skills," Educational Psychology Review, 2019, vol. 31, no. 2, pp. 209-228.
15. L. Vygotsky, "Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes," Harvard University Press, 1978.
16. P. Tough, "How Children Succeed: Grit, Curiosity, and the Hidden Power of Character," Houghton Mifflin Harcourt, 2012.
17. https://hi.wikipedia.org/wiki/[Accessed on 08-06-2024]
18. https://www.scientificamerican.com/blog/observations/a-neuroscientist-explores-the-sanskrit-effect/[Accessed on 08-06-2024]

❐